ओम् शान्ति 19-5-21 मधुबन

आदरणीय इशू दादी जी ने 6 मई 2021, को अपना पुराना शरीर छोड़ा। 7 तारीख को सवेरे 10 बजे उनके पुराने शरीर का अन्तिम संस्कार शान्तिवन के पास नदी किनारे, मुक्तिधाम में किया गया। उसके पश्चात 12 दिन तक उनके निमित्त शान्तिवन में रूकमणि बहन ने प्रतिदिन दोपहर के समय प्यारे बापदादा को भोग स्वीकार कराया। वतन के दिव्य सन्देश इस प्रकार हैं:-

1) 7-5-21

बाबा के पास दिन के समय भोग लेकर जैसे ही मैं वतन में पहुंची, तो बाबा को सभी भाई-बहनों की याद दी और कहा बाबा आज इशू दादी जी के निमित्त भोग लेकर आई हूँ। ऐसे कहते इशू दादी बाबा के सामने इमर्ज हो गई। बाबा ने कहा कि बाबा जानता है, यह बच्ची तो शुरु से ही बाबा के अंग-संग रही है। और इस बच्ची की तो बहुत बड़ी विशेषता थी, बच्ची एकॉनामी का अवतार थी। बाबा के समय भी, दीदी दादी के समय भी इस बच्ची ने यज्ञ को बहुत अच्छी तरह सम्भाला, सब तरह से भरपूर रखा। बच्ची के अन्दर जो एकॉनमी के संस्कार थे, वे बहुत कूट-कूट कर भरे थे। बेगरी लाइफ में भी बच्ची हर चीज़ की सम्भाल करते कभी कोई कमी महसूस होने नहीं दी। बच्ची शुरू से ही सच्ची ईमानदार रहकर यज्ञ के हर बच्चे की उसी प्रकार से पालना की है। फिर बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि यह बच्ची रिपोर्टर भी थी। पता है क्यों? तो बाबा ने सुनाया कि कोई भी बच्चा कुछ भी करता था, बच्ची तुरन्त बाबा को समाचार सुनाती थी। सभी ठीक से श्रीमत प्रमाण चलें, इसके लिए किसी भी बच्चे की सूक्ष्म कमियों पर भी ईशारा दिलाती थी। सभी को हमेशा सच्चाई सफाई से चलने का इशारा खुद भी करती थी। आदिकाल से ही बच्ची मम्मा बाबा के साथ, हाथ में हाथ देकर चलती रही है। बाबा कोई भी कार्य साकार में देते थे, तो बच्ची कहते ही कर देती थी, यह बच्ची की विशेषता थी।

ऐसे बाबा इशू दादी की अनेकानेक विशेषता बड़े प्यार से सुना रहे थे और दादी भी साक्षी होकर सुन रही थी और गर्दन भी हिला रही थी। अभी बाबा को बच्ची से और ही कई कार्य करवाने हैं इसलिए वतन में बुला लिया है। बच्ची का अन्दर से संकल्प तो चल ही रहा था। तो बाबा ने कहा बताओ, इशू तुम्हारा संकल्प चल रहा था? तो दादी भी कहती है, मेरा भी संकल्प चल रहा था कि बाबा अब यह शरीर साथ नहीं देता है, अब तो बाबा के पास आना ही है। बाबा ने कहा भले साकार में कोई भी कारण बीमारी, उम्र, समय का बन जाता है। लेकिन संगम का यह समय बलवान होने के कारण बच्ची भी बाबा के पास वतन में पहुंच गई। बाबा बड़े प्यार से दादी की तरफ इशारा करते हुए सुना रहे थे।

फिर मैंने दादी को कहा आप अचानक कैसे आ गई! तो दादी कहती है, बाबा ने बुलाया और मैं आ गई। मैंने कहा आपको देश विदेश के सभी बच्चे बहुत याद कर रहे हैं। तो दादी कहती है, अभी साकार का मिलन पूरा हुआ। अभी बाबा हमसे जो भी सेवा करायेगा वो हम करेंगे। फिर तो बाबा और दादी के सम्मुख भोग की थाली रखी थी। बाबा ने बड़े प्यार से शान्तिवन का भोग दादी को स्वीकार कराया। बाबा ने कहा शुरु से ही बच्ची ने बाबा के साथ बैठके सब कार्य किये हैं। आगे के कार्यों के लिए बाबा बच्ची को निमित्त बनायेगा। इसके बाद बाबा ने और इशू दादी ने सब तरफ के ब्राह्मण भाई-बहनों को बहुत-बहुत स्नेह भरी यादप्यार दी। फिर दादी ने कहा मेरे सेवा साथियों को भी बहुत-बहुत याद देना, सभी ने मेरी बहुत प्यार सेवा की है, वो मैं भूल नहीं सकती। बाबा दादी की तरफ देखते हुए मुस्कराते रहे, बाबा का और दादी का यादप्यार लेके मैं नीचे पहुंच गई।

ओम शान्ति

2) 8-5-21

आज बाबा के पास इशू दादी के निमित्त याद और भोग लेकर वतन में पहुंची तो बाबा ने झट दादी को वतन में इमर्ज कर दिया। बाबा दादी को देख कहने लगे कि बच्ची आपके लिए भोग आया है। दादी मुस्कराई, भोग देख खुश होने लगी। फिर बाबा ने कहा ब्राह्मण बच्चों को बाबा के घर का कणा-दाणा मिलता है तो वह खुश हो जाते हैं, तो दादी भी खुश हो रही है। फिर बाबा ने कहा कि बच्ची ने शुरु से ही यज्ञ के उतार-चढ़ाव सब देखे हैं इसलिए हर प्रकार से अनुभवी है। ऐसे कहते बाबा ने दादी को अपने पास बुलाके बिठाया और बड़े प्यार से मधुबन का भोग स्वीकार कराया। दादी भोग खाकर बहुत खुश हो रही थी। फिर दादी ने मेरे से पूछा कि सभी ठीक हैं? सभी को मेरी बहुत-बहुत याद देना, मेरी सभी ने, (कविता बहन ने, भाई ने, कुमारी ने) बहुत-बहुत प्यार से सेवा की है। ऐसे कहते बाबा ने दादी को मर्ज कर दिया, फिर बाबा ने यादप्यार देते हमें नीचे भेज दिया।

3) 9-5-21

बाबा के पास आज जैसे ही मैं वतन में भोग लेकर पहुंची। इशू दादी पहले से ही बाबा के पास बैठी हुई थी। बाबा ने कहा विशेष बच्ची के लिए भोग लेकर आई हो! मैंने कहा दादी के निमित्त भोग और सभी की याद लेकर आई हूँ। बाबा ने कहा, यह तो मेरी विशेष बच्ची, अनन्य बच्ची है। इसका गुप्त रूप से नाम खजांची के रूप में है। जैसे बैंक में कोई हर प्रकार का कर्ता धर्ता होता है, पैसे की सम्भाल करने वाला होता है। उसी प्रकार यज्ञ के आदिकाल से ही इस बच्ची ने बहुत बड़ा पार्ट गुप्त रीति से बजाया है। यज्ञ में कुछ भी होता था, पर कभी किसी के आगे बच्ची कुछ भी सुनाती नहीं थी। बच्ची जैसे अन्तर्मुखता का स्वरूप बनकर रही है। बाबा ने कहा भले बच्ची स्थूल धन की सम्भाल करती थी और सभी को बांटती थी। अन्त के समय में बच्ची अपनी हर्षितमुख अवस्था से ज्ञान धन भी बांटती थी। बच्ची ने अपने मीठे खुशी के बोल द्वारा, अपने चेहरे द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष किया है। बाबा ने कहा ऐसी यह बच्ची श्रेष्ठ महान आत्मा है। जैसे शुरू से स्थूल धन बच्ची ने सम्भाला ऐसे ज्ञान धन भी बच्ची के बुद्धि में सदैव रहता था। बाबा के साथ ज्ञान धन की लेन-देन करना बच्ची का कार्य था। बाबा ऐसे सुना रहे थे और इशू दादी मन ही मन बहुत हर्षित हो रही थी।

फिर बाबा और दादी के आगे भोग रखा। तो बाबा दादी को भोग स्वीकार कराने लगे, तो दादी कहती है बाबा पहले आप खाओ। तो दादी बाबा के मुख में डालने की कोशिश करती है, पर बाबा ने कहा पहले बाबा आपको खिलायेगा, पीछे बाबा खायेगा। फिर बाबा ने दादी को भोग स्वीकार कराया और दादी ने बाबा को भोग स्वीकार कराया। फिर दादी ने कहा कि मेरे सेवा साथियों की याद सूक्ष्म में मेरे पास पहुंचती है, उनकी याद मैं दिल ही दिल में समाती हूँ। ऐसे कहते बाबा ने सभी सेवा साथियों को भी वतन में इमर्ज करके स्नेह के साथ यादप्यार दिया। फिर बाबा और दादी का यादप्यार लेते मैं नीचे आ गई। ओम शान्ति।

4) 10-05-21

बाबा के पास वतन में भोग लेकर गई तो जाते ही देखा दादी जी बाबा के बाजू में, साथ में बैठी हुई हैं। बाबा ने कहा जब से जानकी बच्ची और गुल्जार बच्ची बाबा के पास आई है तब से इस बच्ची का भी संकल्प चलता था। बाबा ने कहा कि इस प्रकार दादियों का जाना, यह भी अन्तिम समय की स्मृति दिलाता है। किस प्रकार सभी साथ रहे हैं फिर आहिस्ते-आहिस्ते करके सभी जाते रहें। बाबा ने कहा यह भी अन्तिम समय का इशारा है। ऐसे कहते बाबा ने दादी को बड़े प्यार से मधुबन का भोग स्वीकार कराया। फिर दादी ने भी सभी शानतिवन निवासी भाई-बहनों को याद दी, कहा कि बीच-बीच में कई मेरे से मिलने आते थे, उनकी याद सूक्ष्म

में पहुंचती है। फिर दादी ने कविता बहन वा सेवा साथी भाई-बहनों को भी बहुत-बहुत दिल की याद दी। फिर बाबा और दादी की याद प्यार लेते मैं नीचे पहुंच गई।

5) 11-5-21

आज जैसे ही वतन में गई, तो मैंने बाबा को कहा कि बाबा आज विशेष दोनों दादियों (गुल्जार दादी और इशू दादी) के निमित्त याद लेकर, भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा एक सेकेण्ड मुस्कराने लगे। सामने देखती हूँ तो बाबा ने दोनों दादियों को वतन में पहले से ही इमर्ज किया था। बाबा ने कहा यह भी ड्रामा की सीन बहुत विचित्र है जो आज दोनों दादियों के निमित्त याद और भोग लेकर आई हो। इसके बाद बाबा ने कहा देखो बच्ची दुनिया में भी लोग भोग तो लगाते हैं, लेकिन वे जब भोग बांटना शुरु करते हैं तो थोड़ा टाइम लग जाता है। इसी प्रकार ब्राह्मण बच्चे भी अपने-अपने टाइम पर भोग लगाते हैं, पर बाबा सभी का भोग बड़े प्यार से स्वीकार कर लेते हैं। जिस प्रकार कोई बड़ा परिवार होता है, सबका उनसे प्रेम होता है तो बड़े परिवार के कारण चार घर में चार प्रकार का भोजन बनता है। उसी प्रकार तुम आज दोनों दादियों के निमित्त अलग-अलग भोग लेकर आई हो, बाबा भी दोनों तरफ का भोग इमर्ज कर रहे हैं। यह भी सभी बच्चों का दादियों से कितना प्यार है, स्नेह है। स्नेह के कारण सभी भोग में अपनी-अपनी भावनायें भर देते हैं। बाबा भी दोनों थालियों की तरफ बड़े प्यार से देख रहे थे। बाबा के सम्मुख दोनों दादियां बैठी हुई थी, बाबा ने कहा आओ बच्चियां आज आपके स्थान से भोग आया है। बाबा ने पहले गुल्जार दादी को भोग स्वीकार कराया फिर इशू दादी को भी बड़े प्रेम से भोग स्वीकार कराया। गुल्जार दादी इशू दादी की तरफ देखकर कहती है, इशू तुम भी आ गई। तो इशू दादी कहती है मेरा भी अभी नीचे का पार्ट पूरा हो गया और मैं भी बाबा के पास पहुंच गई। बाबा को सभी भाई-बहनों की याद दी, नीलू बहन, तारा बहन, सभी साथी भाई-बहनों की बाबा को याद दी। बाबा ने भी बड़े प्यार से स्नेह से, मधुबन का भोग स्वीकार कराया। फिर तो बाबा ने दोनों दादियों को मर्ज कर दिया। फिर बाबा ने दादियों के सभी सेवा साथी बच्चों को बड़े स्नेह से याद दिया और यादप्यार लेके मैं नीचे आ गई। ओम शान्ति

6) 12-5-21

आज बाबा के पास जैसे ही भोग लेकर वतन में गई, तो देखती हूँ बाबा आज इशू दादी को कहीं चक्कर पर लेकर गये थे, वहाँ से वापस वतन में पहुंच रहे थे। मैंने बाबा को कहा, बाबा आज आप कहाँ गये थे? बाबा ने कहा आज बाबा बच्ची को सेन्टर्स पर चक्कर लगाने के लिए निकले थे। बाबा ने बच्ची को दिखाया कि सेन्टर्स पर बहनें किस प्रकार रहती हैं! किस प्रकार सेवा करती हैं! किस प्रकार अपनी-अपनी यज्ञ सेवा बाबा के घर में भेजती हैं। बाबा यह दिखाने के लिए, चक्कर लगाने के लिए दादी को ले गये थे। बाबा ने कहा बच्ची को इसलिए चक्कर लगवाया कि बच्ची प्रैक्टिकल देखें कि बाबा की गुप्त बच्चियां, बाबा के घर में कैसे सेवा करती हैं, एक-एक पाई को बाबा के घर में सफल करती हैं और औरों को भी सफल करना सिखाती हैं।

बाबा ने इशू दादी को कहा देखा बच्ची, कैसे मेरी बच्चियां कणा-दाना यज्ञ में भेजकर सफल करती हैं। दादी ने कहा बाबा भी जानता और मैं भी जान रही हूँ कि इस माहौल में किस प्रकार बाबा के बच्चे अपना समय, संकल्प, श्वांस और जो भी कुछ धन है वो बाबा के घर में किस प्रकार सफल कर रहे हैं। बाबा ने कहा, आप तो शुरु से ही बेहद यज्ञ में रही हो, पर कई बाबा के सेन्टर इतने साधारण हैं, पर उनकी भावना कितनी श्रेष्ठ रही है, इसलिए उन सेन्टर्स पर कोई न कोई आत्मा ऐसे निमित्त बन जाती है, जो गुप्त सहयोग देती है। तो दादी कहती

हैं हाँ बाबा। बाबा ने कहा आपने तो बाबा के साथ, दादी के साथ सबकुछ देखा है, अनुभव किया है, उस आधार पर चली हो। पर सेन्टर्स को इतना नहीं देखा, इसलिए बाबा ने आज आपको दिखाया।

फिर मैंने कहा बाबा बाबा आज विशेष सभी की याद और भोग लेकर आई हूँ। तो दादी भोग की तरफ देखने लगी। फिर बाबा ने बडे प्यार से दादी को भोग स्वीकार कराया, इशू दादी ने भी बाबा को भोग खिलाया। बाबा ने कहा साकार में भी बच्ची सदा ही बाप के साथ भोजन करती रही है। तो अव्यक्त रूप से भी बाबा बच्ची को वही पालना अभी भी दे रहा है। ऐसे कहते बाबा ने दादी ने सभी भाई-बहनों को याद दी, यादप्यार लेते मैं नीचे पहुंच गई। ओम शान्ति।

7) 13-5-21 सतगुरूवार

बाबा के पास वतन में भोग लेकरके पहुंची, जाने के साथ बाबा को सभी ब्राह्मण बच्चों की याद दी। आज बाबा के सम्मुख अनेक प्रकार के भोग की थालियां रखी हुई थी। बाबा ने कहा कि बाबा भी विशेष सतगुरुवार के दिन बच्चों के पास चक्कर लगाते यह देख रहे हैं कि बाबा के अनेकानेक बच्चे भोग की थाली लेकर बैठै हैं। और उस भोग के अन्दर कोई न कोई आत्माओं की याद समाई हुई है। आज के समय में हर स्थान, हर घर में अपने परिवार के प्रति, अपने समीप के लोगों के प्रति भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि बाबा आज यही चक्कर लगाते, बच्चों के पास से वतन में पहुंचे हैं।

बाबा देख रहे हैं, ब्राह्मण बच्चों के भी अनेक प्रकार के संकल्प चलते हैं, जबकि बाबा ने हरेक प्रकार की शिक्षा समझानी पहले से ही दे दी है। यज्ञ के शुरु में बाबा ने बच्चों को 14 साल विशेष आत्मा का लेशन पक्का कराया है। यही अभ्यास सभी बच्चों ने बहुत समय से किया है।

फिर बाबा ने जानकी बच्ची को याद किया, कहा जब भी बच्ची क्लास कराती थी तो कहती थी कि मैं कौन, मेरा कौन। अभी वह समय चल रहा है, कि आप ब्राह्मण बच्चों को भी अपने उसी स्वरूप में स्थित होकर आत्मा के लेशन को पक्का करना है। बाबा ने कहा जिस प्रकार शुरु में किसी अज्ञानी को कहते थे अकेले जाना है, अकेले आना है। अभी के समय के अनुसार दुनिया की आत्मायें भी यह महसूस कर रही हैं। बाबा ने तो पहले ही बच्चों को यह लेशन पक्का करा दिया है। अभी हर सेवाकेन्द्र का वायुमण्डल और भी पावरफुल बनाओ। क्योंकि भिन्न-भिन्न संस्कारों वाली आत्मायें ऐसे समय पर जा रही हैं, अगर आपके अन्दर शक्ति नहीं होगी, विल पावर नहीं होगी, तो जो कमजोर आत्मा होती है उस पर दूसरी आत्माओं का अटैक भी होता है। तो अभी आप ब्राह्मण आत्माओं को यही अभ्यास करना है जो आदि में किया था। बाबा अभी हर ब्राह्मण बच्चे की ऐसी मजबूत आवस्था देखना चाहते हैं।

बाबा के सामने भोग रखा था। आज कई आत्माओं का भोग था। बाबा ने सभी को वतन में इमर्ज किया। बाबा ने कहा देखो बाबा के बच्चे हैं, उसी भावना से भोग भेजते हैं, तो बाबा भी अपने बच्चों को इमर्ज कर लेते हैं। दुनिया में तो कई प्रकार के संकल्प, क्वेश्चन चलते हैं। पर बाबा ने अपने बच्चों को सहज समझा दिया है कि अच्छे कर्मों का फल बच्चों को अच्छा ही मिलना है। बाबा ने बड़े प्यार से, स्नेह के साथ सम्मान के साथ उन्हें इमर्ज किया और बाबा के घर का भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा इन सभी बच्चों ने बाबा के घर में अनेक प्रकार का सहयोग दिया है, और अपना भाग्य बना लिया है।

आज इशू दादी के निमित्त भी भोग रखा था, बाबा ने दादी को इमर्ज किया और बहुत प्यार से स्नेह के साथ शान्तिवन का विशेष भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने सभी भाई बहनों को स्नेह भरी यादप्यार दिया, याद प्यार लेते मैं नीचे पहुंच गई। ओम शानति।

8) 14-5-21

आज जैसे ही मैं बाबा के पास वतन में गई, तो बाबा ने आज इशू दादी के साथ-साथऔर इशू दादी विशेष भोग के जगदीश भाई और जानकी दादी को भी वतन में इमर्ज किया हुआ था। जगदीश भाई को देखते बाबा कहने लगे कि यह बच्चा मेरा आदि रत्न है। इस बच्चे ने बहुत सेवायें की हैं। यज्ञ को आगे बढाया है। सभी के दिलों को जीता है।

दादी जानकी को देखकर इशू दादी बहुत खुश हो रही थी। तो बाबा ने कहा कि आज वतन में आप बच्चों का यह विशेष स्नेह मिलन हो रहा है। साकार में तो आपस में मिलते थे, रुहरिहान करते थे। जानकी दादी की तरफ बाबा बड़े प्यार से देखते हुए कहने लगे, कि देखो बच्ची, यह इशू बच्ची भी बाबा के पास पहुंच गई है। तो दादी कहती है अरे इशू तुम भी बाबा के पास पहुंच गई। ऐसे लग रहा था जैसे हर एक कोई अपने इष्ट को याद करते हैं, उनको भोग स्वीकार कराते हैं। ऐसे ही बहुत सुन्दर दृश्य था। बाबा ने कहा संगम पर भी ब्राह्मण बच्चों को, गई हुई आत्माओं को यज्ञ का भोग खिलाने का विशेष पार्ट नूंधा हुआ है। तो दोनों दादियां बाबा की तरफ देख रही थी और जगदीश भाई बीच में बोलने लगे कि बाबा अभी हमारी कम्पनी बढ़ती जा रही है। यज्ञ की स्थापना के कार्य के लिए हमारे साथी बढ़ते जाते हैं। जानकी दादी भी कहती हैं कि कब तक हम लोग इन्तजार करते रहेंगे। तो बाबा ने कहा, बाबा को देरी नहीं है, देरी है आप बच्चों की। आप बच्चे जल्दी-जल्दी तैयार होगें तो विनाश होने में कोई देरी नहीं है। बच्चे जितनी तीव्रता लायेंगे उतना कार्य आगे बढ़ता रहेगा। दादी जानकी और जगदीश भाई के बीच मीठी रुहरिहान चल रही थी। बाबा के आगे भोग की थाली रखी थी। बाबा ने कहा आज किसको पहले भोग खिलाया जायेगा। तो जानकी दादी कहती है आज पहले मैं बाबा को खिलाती हूँ। बाबा ने कहा नहीं, पहले बाबा आप बच्चों को खिलायेगा, पीछे बाबा स्वीकार करेगा। तो बाबा ने पहले जानकी दादी को भोग स्वीकार कराया, फिर इशू दादी को फिर भाई साहब को भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने जगदीश भाई को मर्ज कर दिया। बाबा ने कहा अभी तो इशू बच्ची को बाबा विशेष कहीं न कहीं चक्कर लगाने ले जायेगा। अभी तक वतन में ही बिठाकर रखा है फिर तो सेवा अर्थ जाना है, पहले सेवास्थानों पर बाबा सेवा अर्थ चक्कर लगावायेंगे। इसके बाद बाबा ने दोनों दादियों को भी मर्ज कर दिया। बाबा ने कहा सभी को स्नेह भरी याद देना। कितना प्यार से बाबा के पास भोग भेजते हैं, बनाते हैं, सजाते हैं। बाबा भी अपने बच्चों को दादियों को वतन में इमर्ज करके भोग स्वीकार कराते हैं। फिर तो सभी के प्रति बाबा का यादप्यार लेते हुए मैं नीचे पहुंच गई।

ओम शान्ति

9) 15-5-21

आज जब बाबा के पास वतन में भोग लेकर पहुंची, बाबा को सभी की याद दी तो याद देने के साथ बाबा ने इशू दादी को इमर्ज किया। बाबा ने कहा कि दुनिया में ऐसे समय पर लौकिक ब्राह्मणों को कितना खिलाते हैं, दान करते हैं। बाबा कहने लगे, तुम बाबा के ब्राह्मण बच्चे एक-एक ब्राह्मण हजारों से भी बढ़कर हो। बाबा को हजार भुजाओं वाला कहा जाता है इसलिए कोई भी कम नहीं है। संगम पर आप ब्राह्मण बच्चे शरीर छोड़कर गई हुई

आत्माओं को भोग स्वीकार कराते हो। यह प्रथा भी संगम पर ही शुरु होती है क्योंकि दुनिया में भी लोग, कोई बड़ा व्यक्ति होता है, धनवान होता है, तो उसके प्रति कोई 36 प्रकार का, कोई 56 प्रकार का भोग ब्राह्मणों को साक्षी रखकर स्वीकार कराते हैं। यहाँ तो ब्राह्मण बच्चे जिनके प्रति भी याद और भोग लेकर आते हैं, तो सच्चा, सतगुरु बाप अपने श्रेष्ठ कर्म किये हुए बच्चों को इमर्ज करके वतन में भोग स्वीकार कराते हैं। बाबा ने कहा इसलिए करने, कराने वाले बच्चे कितने श्रेष्ठ भाग्यशाली हैं। बाबा देखते हैं, अभी समय अनुसार दुनिया में तो वह भी नहीं कर पा रहे हैं, एक-एक परिवार से कितनी आत्मायें जा रही हैं। बाबा के पास बच्चों के संकल्प और याद पहुंचती है, बाबा भी उसी संकल्प से उन बच्चों को इमर्ज कर लेते हैं और उसी प्यार से वतन में आया हुआ भोग स्वीकार कराकर उन बच्चों को तृप्त कर देते हैं। इस बच्ची को भी बाबा विशेष मर्ज करके मधुबन का भोग बड़े प्यार से स्वीकार कराते हैं। भोग में सभी के याद रूपी संकल्प समाया हुआ होता है। बाबा और इशू दादी के सामने भोग की थाली रखी थी। बाबा ने इशू दादी को बड़े प्यार से भोग स्वीकार कराते हुए, सभी भाई-बहनों को बड़े प्यार से यादप्यार दी और हमें साकार वतन में भेज दिया। ओम शान्ति ।

10) 16-5-21

आज जैसे ही मैं वतन में भोग लेकर पहुंची तो देखती हूँ बाबा आज दादी को कहीं चक्कर लगवाते हुए वतन में पहुंच रहे थे। मैंने बाबा से पूछा, आज आप कहाँ चक्कर लगाने दादी को ले गये थे? तो बाबा ने कहा बच्ची को बाबा आज कई सेन्टर्स का, चक्कर लगाने दादी को ले गये थे, कई स्थानों के बच्चे भी दादी को याद कर रहे थे। मैंने बाबा को कहा बाबा भोग लेकर आई हूँ, दिन का समय है। तो दादी भोग देखकर कहती है, इतना भोग लेकर क्यों आती हो! तो बाबा ने कहा कि यह बच्ची शुरु से ही इकानामी का अवतार रही है। यह संस्कार दादी का अन्त तक रहा है। बाबा के बच्चे भले कुछ भी ले आते थे, देख के खुश हो जाती थी, उसके बाद भूल जाती थी। सभी दादियों का, पुराने बच्चों का शुरू से ही यह संस्कार रहा है कि किसी ने कुछ दिया, उस समय बड़े प्यार से ले लेते, पर उसमें उनकी आसक्ति नहीं जाती थी, कि हम इसमें से कुछ उठाकर अपने पास रख लें। तो बाबा कहने लगे इसीलिए बच्ची भोग की थाली देखकर कहती है इतना क्यों ले आई हो! बाबा ने कहा अभी एक दो दिन वतन में और रखेंगे फिर तो आपको भी सेवा पर जाना होगा। फिर समय अनुसार ही भोग स्वीकार करायेंगे। तो दादी शान्त हो गई, बड़े प्यार से बाबा के साथ में बैठी हुई थी। दादी कहने लगी अच्छा है, साथी बहनें, भाई जरूर प्यार से याद करके एक-एक चीज़ बनाते हैं और हमारे प्रति बाबा के प्रति भोग भेजते हैं। दादी और बाबा मन ही मन में मुस्कराते कहने लगे कि यह भोग बाबा और बच्ची के निमित्त वतन में आता है लेकिन खाते तो सभी ब्राह्मण बच्चे ही हैं। यह सभी ब्राह्मण बच्चों के मुख में जाता है, इससे सभी बच्चे खुश हो जाते हैं, तृप्त हो जाते हैं इसलिए बाबा के पास समय प्रति समय कोई न कोई भोग आता है और बाबा भी उन आत्माओं को इमर्ज कर भोग स्वीकार कराते हैं। फिर बाबा इशू दादी को कहते हैं, मुख खोलो, पहले क्या खाना है! तो बाबा हरेक चीज़ पर दृष्टि डालते हुए बड़े प्यार से उसमें शक्ति भरते हुए भोग स्वीकार करा रहे थे। बाबा ने कहा इस बच्ची के निमित्त, बाबा के निमित्त अनेक बच्चों का मुख मीठा हो जाता है। बाबा ने और इशू दादी ने शान्तिवन निवासी भाई-बहनों को बहुत-बहुत यादप्यार दी। याद प्यार लेते मैं नीचे आ गई। ओम शान्ति।

11) 17-5-21

बाबा के पास वतन में भोग लेकरके पहुंची। तो आज दादी बड़ी निश्चिन्त होकर बाबा के पास बैठी हुई थी। मैने कहा बाबा दादी के निमित्त भोग और सभी की याद लेकर पहुंची हूँ। तो बाबा बोले बच्ची का शुरु से सौभाग्य रहा है, शुरु से ही दादियों के साथ, मम्मा के साथ रहकर हर प्रकार के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग दिया है। हर कार्य में साथ मिलकर चलती रही है। आज भोग को देखकर दादी अपने आपमें महसूस कर रही थी कि अब तो बाबा मुझे कोई न कोई स्थान पर सेवा में भेजेंगे। बाबा ने कहा यह भी महारथी बच्चों का भाग्य रहा है कि कम से कम 12-13 दिन इन बच्चों को वतन में इमर्ज कर बाबा भोग स्वीकार कराते हैं। भक्ति भी आप बच्चों ने पिछले जन्म में की हुई है, उसका फल तो बच्चों को मिलना ही है। उसके फलस्वरूप बाबा वतन में बच्चों को भोग स्वीकार कराते हैं। संगमयुग आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए कितना श्रेष्ठ समय है कि भगवान बाप के साथ बैठकर आप बच्चे मिलन भी मनाते हैं और भगवान आप बच्चों को अपने हाथों से भोग भी स्वीकार कराते हैं। दादी, बाबा की बातें सुनते हुए कभी गम्भीरता की, कभी स्नेह की मूरत बन रही थी। बाबा कहने लगे कि बच्ची का साकार में यही स्वभाव था। बाबा बच्ची को रोज़ वतन में इमर्ज करते हैं और जब नीचे से भोग आता है तो प्यार से भोग स्वीकार कराते हैं।

ऐसे कहते बाबा ने बड़े प्यार से, स्नेह के साथ मधुबन का, शान्तिवन से भोग स्वीकार कराया। दादी भी बाबा की तरफ देखते हुए हाथ ऊपर करते हुए बाबा को भोग स्वीकार कराती है। बाबा ने और दादी ने कहा कि सभी को हमारी स्नेह भरी दिल की याद देना। दादी ने कहा मैं भी सभी को याद करती हूँ। ऐसे याद प्यार लेकर मैं नीचे पहुंच गई।

12) 18-5-21

आज जैसे ही मैं बाबा के पास वतन में पहुंची, तो जाते ही बाबा को कहा बाबा आज सभी की स्नेह भरी याद और भोग लेकर पहुंची हूँ। बाबा मुस्कराने लगे और बाबा ने इशू दादी को तुरन्त इमर्ज कर दिया। मैंने दादी को देखकर कहा, दादी आज तो आपको सभी बाबा के बच्चे नीचे साकार वतन में याद कर रहे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे आपके गुणों की माला सभी सिमरण कर रहे हैं। तो दादी को ऐसे सुना ही रही थी तो देखती हूँ कि एकदम से इशू दादी के गले में अनेक गुणों की माला बाबा डाल देते हैं। और बाबा कहने लगे कि बच्ची की शुरू से बहुत ही गुप्त सेवा रही है। आज बाबा भी सुन रहे थे कि बच्ची के प्रति सभी कितने गुणगान कर रहे हैं। कितनी महिमा कर रहे हैं।

तो जैसे बाबा ने वो माला पहनाई तो इशू दादी ने वो माला अपने गले से उतार के बाबा के गले में डाल दी। और कहने लगी बाबा यह जितने भी गुण, जितनी भी विशेषता सभी वर्णन कर रहे हैं, ऐसा महिमा योग्य तो आपने बनाया है ना। हम तो छोटेपन में आये, न कोई ज्ञान था, ना ध्यान था, ना समझ थी। जो भी कुछ बनाया बाबा आपने बनाया। फिर बाबा ने एक सीप दिखाते कहा कि जैसे एक सीप होता है, उसकी वैल्यू बहुत होती है। ऐसे मेरे आदि रत्न बच्चे जो शुरु में बाबा मम्मा के साथ आये, उन बच्चों ने बहुत ही त्याग तपस्या बाबा के साथ रहकर की है। वह संस्कार इस बच्ची में भरे हुए हैं। सबसे बड़ी विशेषता, बच्ची शुरु से ही बाबा के घर में, बाबा के यज्ञ में पूरा नष्टोमोहा होकर रही है। इस बच्ची का कभी भी लौकिक से लगाव, मोह नहीं रहा। सिर्फ आंख खुलते ब्राह्मण परिवार देखा, बाबा मम्मा देखा। यह ईश्वरीय परिवार ही इस बच्ची के आगे घूमता था। लेन-देन के कारण सभी बच्ची के करीब आते थे। बच्ची शुरु से अंग संग रही, दीदी दादी के संग रही, सर्व

दादियों से विशेष स्नेह रहा। बाबा ने कहा कि ऐसी आदिकाल की मेरी बच्ची गम्भीरता की मूत, इकानामी की अवतार रही है, इसकी जितनी बातें सुनायें वो कम हैं। जब बाबा सुना रहे थे, तो दादी मन ही मन मुस्करा रही थी।

बाबा के आगे, दादी के आगे भोग की थाली रखी थी। मैने कहा बाबा आज सभी बड़े भाई-बहनों की, मधुबन निवासियों की याद लेकर पहुंची हूँ। जैसे बाबा ने भोग की थाली खोला और देखा तो कहते हैं देखो, इशू तुम्हारे लिए कितने प्रकार का भोग और भोजन आया है। बाबा एक-एक चीज़ को खोलते जा रहे थे और इशू दादी भी भोग की थाली की तरफ देखती जाती थी। आज और कई स्थानों से भी दिन के अनुसार बाबा के सम्मुख भोग पहुंचा था। तो बाबा सभी के भोग को देखते एक-एक चीज़ को निहारते हुए शक्ति भर रहे थे। फिर बाबा ने बड़े प्यार से दादी को भोग खिलाया। दादी ने बाबा को खिलाया। बाबा ने कहा यही बाप और बच्चों का संगम के समय का प्यार अद्भुत है।

आज बाबा के साथ दादी ने सभी भाई-बहनों को और मधुबन निवासी भाई-बहनों को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद प्यार दी। बाबा ने कहा अब तक बाबा ने बच्ची को वतन में रखा, लेकिन बच्ची जिस प्रकार की सेवा के योग्य है, बाबा आगे भी बच्ची से सेवा करायेंगे। ऐसे कहते बाबा ने इशू दादी को मर्ज कर दिया। सभी के प्रति यादप्यार लेते मैं नीचे आ गई। ओम् शान्ति

न्युयार्क में मोहिनी बहन जी ने इशू दादी जी के प्रति 12 दिन भोग लगाया, (वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश)

7-5-21

बाबा के पास इशू दादी के अर्थ वतन में भोग लेकर गई तो दादी जी बहुत विश्राम में थी। मैंने कहा सारे परिवार ने यादप्यार और भोग भेजा है। तो बाबा ने खुद भी भोग स्वीकार किया और दादी जी को भी स्वीकार कराया। बाबा ने कहा अभी दादी जी बहुत गहरे विश्राम में, साइलेन्स में हैं क्योंकि अभी नये पार्ट की तैयारी कर रही हैं। यज्ञ में इनका शुरू से लेकर बहुत महत्वपूर्ण पार्ट था। अब यज्ञ की समाप्ति होनी है तो उनका पार्ट भी पूरा हुआ। बाबा ने कहा यह तो स्नेह की मूर्ति थी, साथ ही सबको सम्मान बहुत देती थी। और उनके दिल में बाबा के प्रति, सभी के प्रति न केवल धन्यवाद की भावना थी, सबके लिए सम्मान भी था।

8-5-21

बाबा के सामने भोग रखा और बाबा को कहा इशू दादी के प्रति परिवार की तरफ से भोग लाये हैं। मैंने कविता बहन और सभी की याद दी तो बाबा मुस्कराने लगे। इशू दादी तो बाबा की बहुत प्रिय समीप रत्न थी। बाबा ने दादी जी को कहा आपके लिए यादप्यार और भोग आया है। बाबा ने दादी जी को भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने दादी के साथ तथा परिवार के साथ दृष्टि की लेन-देन की।

फिर बाबा ने कहा अब आप सबको फरिश्ते की ड्रेस पहननी पड़ेगी क्योंकि अभी सभी में भय है, चिन्ता है, वह आप सब पर प्रभाव नहीं डाले, इसके लिए यह ड्रेस पहनके ही हरेक की बात सुनो। इससे आप सभी सेफ रहेंगे और औरों को भी बचा सकेंगे। आक्सीजन तो मनमनाभव की है, इससे आपको खुद भी आक्सीजन मिलेगी, इससे श्वांसों श्वांस की स्मृति से अपने में और औरों में भी शक्ति भरो।

बाबा ने कहा बच्ची में बहुत विशेषतायें थी, लेकिन बच्ची को किसी भी बात का अहंकार नहीं था। बाबा ने

उनकी हर विशेषता को बेहद में यूज़ किया। वह जब से बाबा की बनी उनका बुद्धियोग किसी भी मनुष्यात्मा, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक परिवार में किसी के प्रति नहीं गया। बुद्धि फ्री थी, बुद्धियोग केवल बाबा के प्रति था। बाबा जिसकी विशेषता प्रयोग करते हैं वो औरों को प्रेरणा भी देते हैं और खुद भी बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्नचित्त रहते हैं। दादी एक उदाहरण थी - प्रसन्न्चित्त और सन्तुष्टता की। बाबा ने कहा किसी को कुछ कहना है। तो दादी ने कहा, मेरे को यज्ञ से बेहद के परिवार से बहुत स्नेह मिला है। मैंने कहा अपने साथियों को कुछ कहना है। तो दादी ने कहा कि उनको कहना, आप लोगों ने मेरे जीवन से जैसे देखा मैं सदा सन्तुष्ट रहती थी, हर्षित रहती थी, आप सभी भी वही करो, मुझ आत्मा को याद नही करो, एक बाबा को याद करो। जो आप लोगों ने अपनी आंखों से देखा वो जीवन में धारण करो। ऐसे कहते हुए बाबा ने सभी को याद दी, और मैं नीचे आ गई।

9-5-21

सबकी यादप्यार और भोग लेके वतन में गये। बाबा ने सबको स्नेह भरी दृष्टि दी। आज मदरडे है तो बाबा हम सबकी माँ है। बाबा को भोग स्वीकार कराया, मैंने कहा इशू दादी जी के लिए भोग है तो बाबा ने इशू दादी को भी भोग स्वीकार कराया। फिर बाबा ने कहा देखो, जितना ही दादी जी में हल्कापन था उतना ही गम्भीरता भी थी, क्योंकि ऐसे गुण जिस आत्मा में होते हैं, तो अनेकों को प्रेरणा मिलती है। बाबा ने इशू दादी को स्नेह भरी दृष्टि दी और दादी जी ने भी सभी को दृषटि से यादप्यार दिया।

10-5-21

सभी की यादप्यार लेते भोग लगाने के निमित्त जब वतन में पहुंचे तो बाबा ने दृष्टि से मुलाकात की। फिर मैंने कहा इशू दादी आपके लिए भोग लाये हैं। बाबा ने इशू दादी को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने कहा संगमयुग पर भोग लगाते हैं, उसकी यादगार भक्तिमार्ग में भी चलती है। जो परिवार के पूर्वज हैं, उनको तो भोग लगाना ही है, उनसे भक्तिमार्ग में तो मनोकामना रखते हैं। यहाँ तो बच्चे कोई कामना नहीं रखते। एक-एक बच्चे को बाबा ने मूर्ति बनाया है। सभी भिन्न हैं, परन्तु अगर यह ख्याल हो कि भगवान ने हमें बनाया है, तो उस विशेषता के आधार पर फिर महिमा योग्य भी बनते और पूज्यनीय भी बनते हैं।

इशू दादी बहुत विश्वासपात्र थी। भगवान का खजाना सम्भालना, उसमें 100 प्रतिशत उनकी इमानदारी में कमी नहीं थी। इमानदारी में अगर मैं और मेरा भी आ जाता है, तो वो 100 प्रतिशत नहीं है। भगवान ने खुद मूर्ति बनाई, भगवान का खजाना सम्भालने के लिए, तो वो पूरे परिवार की विश्वासपात्र थी। वो सम्बन्ध-सम्पर्क में भी बहुत इमानदार थी। तो आप सभी भी अपनी विशेषताओं को देखो जो बाबा ने गिफ्ट दी है उसे मुझे यज्ञ में सफल करना है। यह अटेन्शन रखने से स्वमान भी बढ़ेगा और सम्मान भी मिलेगा। सभी एक दूसरे को भी इसी दृष्टि से देखो, एक-एक को ईश्वरीय कार्य अर्थ बाबा ने बनाया है और बना रहा है। इशू दादी तो सुन करके बहुत मुस्करा रही थी। बाबा ने सभी के लिए बहुत यादप्यार दी, जो भी भोग बनाते हैं, लगाते हैं, सभी को बहुत-बहुत याद दी।

11-5-21

बाबा की याद में भोग लगाने के लिए बाबा के पास पहुंची। बाबा ने बहुत दिल से दृष्टि द्वारा स्वागत किया। मैंने कहा इशू दादी के निमित्त भोग लाये हैं। तो बाबा ने भोग स्वीकार किया , इशू दादी को भी भोग स्वीकार कराया। बाबा ने इशू दादी को कहा आपने सबके दिल को जीता हुआ है, सभी आपको दिल से प्यार

करते हैं। दादी जी मुस्करा रही थी, फिर बाबा ने कहा देखो, बाबा ज्ञान देते हैं, ज्ञान समझ है परन्तु योग तो आप लोगों को ही करना होगा। जितना ज्ञान की समझ से कदम उठायेंगे, उतना बाबा की तरफ से आप सबको शक्ति मिलती रहेगी। बाबा ने कहा देखो जितना अच्छा योग होता है, उतना हल्कापन रहता है। बाबा ने कहा देखो, इशू दादी पवित्र थी, कन्या थी, बहुत पवित्र जीवन रहा लेकिन पवित्रता के साथ-साथ उनमें बहुत ज्यादा दिल में सच्चाई और सफाई थी। हरेक के प्रति उनमें बहुत प्रेम था। बाबा के भण्डारे में कोई कम ज्यादा देता है तो उसे देखकर उनकी भावना में परिवर्तन कभी नहीं देखा। इशू दादी सच्चे दिल से सबको प्यार करती थी। कभी भी किसी भी कारण से दादी जी ने अपनी सच्चाई नहीं छोड़ी। योगयुक्त तो थी पर साथ में युक्तियुक्त भी थी। बाबा ने इशू दादी को कहा आपको कुछ कहना है। तो दादी कहती है आपने सब कुछ कह दिया। फिर दादी ने कहा, मेरे सेवासाथियों को कहना आप सब निश्चिन्त रहो, समय होता है पार्ट पूरा होता है, तो आत्मा को अपना पार्ट बजाने जाना होता है। खुद को ईश्वरीय सेवा में बिजी रखो। ऐसे कहते दादी ने यादप्यार दिया।

12-5-21

बाबा के पास भोग लगाने के लिए पहुंची, बाबा ने दृष्टि द्वारा स्वागत भी किया और मुलाकात भी की। मैंने कहा आपके लिए और दादी जी के लिए भोग लाई हूँ। बाबा ने भोग स्वीकार किया और दादी को भी भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा आज जगदीश भाई का भी दिन है, तो बाबा ने जगदीश भाई को इमर्ज करके यादप्यार और भोग स्वीकार कराया। फिर सभी आपस में नयन मुलाकात कर रहे थे।

बाबा ने कहा देखो, संगमयुग में आपको हरेक प्रकार की समझ है, आप समझ के आधार पर जो चाहे कर सकते हो। आत्मा में किसी भी प्रकार की खाद है, तो योग अग्नि को सदा प्रज्जवलित रखो। ऐसा तो नहीं होता है कि अग्नि जलायेंगे, फिर फिर बुझायेंगे फिर जलायेंगे। जिनको यह याद रहता है कि अग्नि प्रज्जवलित है वो समय प्रति समय अग्नि से खाद मिटाते हैं। बाबा ने कहा यह यज्ञ रचा है, यह भी एक अग्नि है, वो किस लिए है? इसमें जो भी स्वाहा करना है, जो सफल करना है, वो भी यज्ञ के द्वारा ही होता है। अगर आत्मा की खाद मिटती जाये और सबकुछ सफल होता जाये, तो आत्मा तीव्रता से सम्पूर्णता की तरफ बढ़ सकती है।

बाबा ने कहा इशू दादी की एक विशेषता थी कि वह निरन्तर एकरस रही, अखण्ड निश्चय रहा। बाबा से प्यार एकदम अखण्ड रहा। कभी भी कहीं भी किसी प्रकार से खण्डित नहीं हुआ। हर चीज अखण्ड थी। इसी से दादी जी को लम्बा पार्ट बजाने को मिला। अब जो पार्ट है वो अलग तरह से चलेगा। बाबा ने कुछ बोला नहीं, बस कहा अलग पार्ट चलेगा। उसके बाद बाबा ने कहा हर मिनट जो भी सीन आती है, ड्रामा में परिस्थिति आती है परन्तु अगर बाबा की याद में होंगे, तो ड्रामा की हर बात में कल्याण के अनुभवी बनेंगे। जितना अनुभवी बनेंगे, हर सीन को पास कर पास विद आनर बनेंगे तो सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त करते जायेंगे। ड्रामा को सदा कल्याणकारी समझो। कल्याणकारी युग में कल्याण-कल्याण करते आपका भी कल्याण होगा और आप दूसरों के लिए भी कल्याणकारी बनेंगे। ऐसे कहते बाबा ने बहुत-बहुत यादप्यार दी।

13-5-21

बाबा को भोग स्वीकार कराया, बाबा ने सभी को दृषटि दी। बाबा ने कहा इस समय हरेक भगवान से शक्ति, स्वास्थ्य मांग रहे हैं। बाबा ने कहा अपने निश्चयबुद्धि के बल से और दूसरा मन को शान्त रखने से स्वयं की आन्तरिक शक्ति और बाबा की मदद से परिस्थितयों को पार कर लेंगे। हरेक को इस समय घर और मंजिल का ठिकाना बताना बहुत जरूरी है। आत्मा ने कैसे शरीर छोड़ा, यह नहीं सोचना है। लेकिन जब आत्मा

एक शरीर छोड़ती है तो उसके श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ गुणों के आधार पर परिवार का प्यार अनुभव होता है। इशू दादी के लिए बाबा ने कहा उनका मन बहुत स्थिर था, इससे सदा ही बाबा से शक्ति लेती रही। बाबा ने सभी सेवाधारियों को याद प्यार दी।

14-5-21

बाबा के सामने पहुंची नयन मुलाकात करते हुए सबकी यादप्यार दी। बाबा ने कहा हर बच्चे को फरिश्ता बनना है। लेकिन अगर किसी प्रकार का लगाव झुकाव होगा तो संस्कार नीचे लेकर आयेगा। जितनी-जितनी देही अभिमानी स्थिति का अभ्यास करेंगे, उतना फरिश्ता स्थिति का अनुभव होगा। मैंने कहा आपकी मदद से बनेंगे ना! तो बाबा ने कहा स्थिति के अनुसार मदद मिलती है, जितना आप अभ्यास करके स्थिति बनायेंगे उतना आपको बाबा लिफ्ट देगा।

मैंने कहा इशू दादी के प्रति भोग लाई हूँ, इशू दादी को इमर्ज करके कहा आपके प्रति भोग आया है। दादी जी बहुत ही सन्तुष्ट थी, बाबा ने कहा देखो, कई साल की तपस्या के बाद आत्मा हर बात से उपराम हो जाती है। इश दादी जी शरीर से पार्ट बजा रही थी, यज्ञ के प्रति, बाकी उपराम थी। आप सबको भी उपराम रहकर पार्ट बजाना है। ऐसे कहते हुए बाबा ने सबके लिए यादप्यार दी और मुझे नीचे भेज दिया। ओम शान्ति

15-5-21

बाबा को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने दृष्टि दी और कहा कि मेरा हरेक बच्चा स्पेशल है, जब से बाबा का बना तब से बाबा हरेक बच्चे की विशेषता को जानते हैं, पर बच्चे अपनी विशेषताओं को जानने में समय लगा देते हैं और फिर उसी अनुसार पार्ट बाजाते हैं। इसमें हरेक नम्बरवार होते हैं। बाबा के प्यारे और समीप वही रहते हैं जो अपनी विशेषताओं को पहचानते हैं। मैं बाबा की बाहें हूँ, मैं यह सेवा कर सकता हूँ, यह भी पहचान चाहिए। इशू दादी ने अपनी विशेषताओं को पहचान लिया था। अनेक तरह की परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपना पार्ट नहीं छोड़ा। मुरली नोट करना, यज्ञ का भण्डारा, पत्र-व्यवहार जो भी जिम्मेवारी मिली वो उन्होंने अच्छी तरह से अथक होकर सम्भाली। जो अथक होकर सेवा करते हैं तो बाबा भी उनको मदद करते हैं।

16-5-21

बाबा ने कहा स्वयं के लिए और दूसरों के लिए सबसे बड़ा गुण स्नेह ही है। वर्तमान समय ईश्वरीय स्नेह, आत्मिक स्नेह में बहुत शक्ति है। वे स्वयं को भी शक्तिशाली रखते हैं और जिससे स्नेह होता है उसको भी शक्ति का अनुभव होता है इसलिए बच्चों को इस समय अपनी दृष्टि वृत्ति और कर्म, स्नेह से भरपूर रखना है। स्नेह के साथ फीलिंग बहुत पवित्र रखो। जब प्रेम और पवित्रता दोनों गुण होते हैं तो हर प्रकार से पुरुषार्थ निर्विघ्न होता जाता है। यही भावना निरन्तर रखो। मैंने कहा इशू दादी के प्रति भोग है। तो बाबा ने कहा देखो, इस आत्मा के दिल में बाबा के लिए निरन्तर प्यार था। जिसके दिल में बाबा के लिए प्रेम होता है, उससे दूसरों को भी प्रेम अनुभव होता है। वर्तमान समय बापदादा के साथ पूर्वज आत्माओं के प्रति भी दिल का सम्बन्ध हो, तो इससे भी बहुत दुआयें मिलेंगी।

17-5-21

आज ऐसे लगा जैसे बाबा ही बुला रहे हैं, मैंने कहा बाबा भोग लेके आई हूँ। बाबा ने सभी को बहुत प्रेम से दृष्टि दी। बाबा ने इशू दादी को भोग स्वीकार कराया। मैंने कहा कभी-कभी ऐसे लगता है, कि आप बुला लेते

हैं, सहज लगता है। बाबा ने कहा, बाबा तो हमेशा आह्वान करते हैं, जितना-जितना आप लोग आत्मिक स्थिति में रहेंगे तो आपको एकदम खींच होंगी, बाबा वतन में बुला लेगा। बाबा हमेशा मदद देता है लेकिन आप लोग कभी-कभी मदद ले पाते हो। ऐसा समय आयेगा जो आप लोगों को इस साकार दुनिया में रहते अनुभव करना होगा कि हम यहाँ नहीं हैं। इसके लिए बहुत न्यारी स्थिति चाहिए, कहीं भी बुद्धि फंसी हुई ना हो, यह कर्मबन्धन है। सेवा अर्थ संकल्प आना लेकिन बार-बार संकल्प आना, यह बन्धन बन जाता है। आप लोग कर्मयोगी हैं परन्तु बाबा की सेवा है, बाबा का यज्ञ है, बाबा ही करवा रहा है। अगर अन्दर यह स्मृति बन जायेगी तो हर कर्म न केवल श्रेष्ठ होगा बल्कि अनेकों को सुख देने वाला होगा और बन्धन भी नहीं बनेगा, भाग्य बनता रहेगा। इशू दादी में न्यारापन बहुत था सभी से न्यारी होने कारण बाबा के समीप, यज्ञ के समीप और दादियों के साथ समीपता का सम्बन्ध रहा। फिर बाबा ने सभी के लिए याद प्यार दी।

18-5-21

सभी की यादप्यार लेते हुए बाबा के पास भोग लगाने के निमित्त पहुंची। सभी की बहुत-बहुत यादप्यार बाबा को दी। मैंने कहा कोई आपसे शक्ति लेना चाहते हैं, कोई आशीर्वाद लेना चाहते हैं। मैंने कहा इशू दादी के लिए और अन्य आत्माओं के लिए भी भोग है। बाबा ने सभी को फरिश्ते रूप में भोग स्वीकार कराया। बाबा सभी को दृष्टि दे रहे थे। बाबा ने कहा देखो, बाबा तो हाज़िर ही है, बाबा की मदद भी है लेकिन समय ऐसा आयेगा जो अपना जितना जमा किया होगा वो ही काम आयेगा। जब पार्ट बदलता है तो आपका जमा किया हुआ खजाना, शक्तियां, श्रेष्ठ कर्म, वही काम आते हैं। अभी समय एक तरफ तो बहुत नाज़ुक है, पर महत्वपूर्ण भी है क्योंकि आप सब मन की शक्ति से, तन से श्रेष्ठ कर्म, धन से भी जो कुछ कर सकते हो वो करके जमा कर लो इसलिए नि:स्वार्थ भाव से, दया भाव से, सेवा भाव से हरेक चीज़ को सफल करते जमा करते जाओ।

इसके बाद बाबा ने कहा देखो, इशू दादी बचपन में जब से आई, बापदादा के साथ ही रही। संग में रहने से जो धारणायें हैं, गुण हैं वो तो बाप समान होते ही हैं। संग का रंग तो होता ही है। वो बहुत ही गुप्त थी। लेकिन उसने अपने में बापदादा के सभी गुण और शक्तियां भर ली थी। इस समय इशू दादी का जाना, यह एक चेप्टर पूरा होता है लेकिन दूसरा खुलता है। सभी सोच रहे हैं, कि बहुत बड़ा चेप्टर बन्द हो रहा है। बाबा ने कहा वो तो हो ही रहा है, लेकिन दूसरा खुल रहा है। उस चेप्टर में आप सभी का पार्ट है, इसलिए आप सभी किसी भी बात में निराश ना होके, कभी भी ऐसे ना सोचो कि अब क्या होगा। ड्रामा अनुसार जो हो रहा है, वो ठीक है लेकिन अब आप लोगों का पार्ट है ना। सभी बेहद में रह, बेहद का दिल, विशाल दिल रखो। यज्ञ के प्रति बहुत स्नेह की भावना रखो क्योंकि अब आप सबको मिलके यज्ञ को सम्भालना है, हर प्रकार के सहयोग से। परिवर्तन तो बड़ा है लेकिन उस बड़े परिवर्तन के बाद भी जो कुछ ड्रामा अनुसार होगा वो भी बहुत महत्वपूर्ण है, उसमें आप हरेक का पार्ट है। इसमें हरेक समझे, हरेक को यज्ञ की जिम्मेवारी लेनी है। हर प्रकार से बेहद की सेवा में तत्पर रह करके, न केवल अपना भाग्य बनाना है, परन्तु अच्छी तरह से सहयोगी रहना है।

इशू दादी गुप्त थी पर उनकी जो ड्यूटी थी, वो बहुत बड़ी ड्यूटी थी। शुरु से लेकर अभी तक यज्ञ की भण्डारी उनके हाथ में ही जाती थी। यह भी पार्ट पूरा हुआ, उसमें गुण भी थे, सच्चाई सफाई भी थी। जब भावना होती है तो भावना अनुसार जब कोई निमित्त बनता है तो बरक्कत बहुत होती है। बाबा इशू दादी को दृष्टि दे रहे थे। जो भी सेवा साथी थे, बाबा ने सबको बहुत याद दी।